श्रीमद्गोविन्दगीता

आईएसबीएन : 978–81–929767–1–7
प्रथम संस्करण : 2021
पृष्ठ संख्या : पन्द्रह+405 रंगीन चित्र पृष्ठ : पचपन

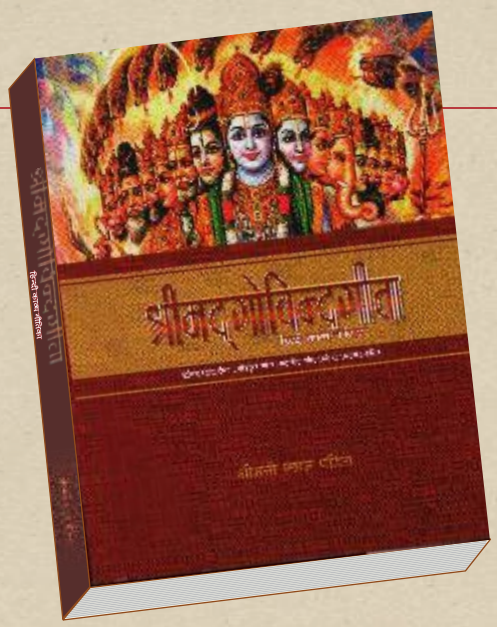

युद्ध क्षेत्र कुरुक्षेत्र में भगवान श्री कृष्ण के श्री मुख से निःसृत अर्जुन को दिए गए उपदेश, महाभारत के सबसे सुन्दर और महत्वपूर्ण प्रवचन सभी के लिए प्रेरणा–स्त्रोत है। कर्म योगी कृष्ण का निष्काम कर्म योग मनुष्य को निर्वाण का सहज सुगम मार्ग दिखाता है। शिक्षित समाज में गीता ज्ञान का गूढार्थ एंव दर्शन समझने की क्षमता अधिक होने के कारण उसमें गीता पठन–पाठन का अधिक प्रचार है। संस्कृत में अनभिज्ञ, हमारे बहुत से लोग गीता पाठ से वंचित रह जाते है।

इस असुविधा को लक्षित करके हमने निश्चय किया कि तुलसी कृत रामायण के अनुरूप हिन्दी गीता भी होना चाहिए। यही असुविधा रामायण शैली में लिखी गयी इस गीतिका के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गयी। इसमें भाषा शैली, छन्द–चौपाई, दोहा, सोरठा और छन्दादि भी श्री तुलसी रामायण के अनुरूप ही है जिस से सर्वसाधारण के लिये इसका पाठ सुगम हो सके। अपने इस प्रयत्न में यह सचित्र हिन्दी सरल भाषा टीका संग्रह कितना सफल होगा, यह तो गीता प्रेमी ही बता सकेगें।